2. गोस्वामी तुलसीदास

कवि परिचय –

हिंदी साहित्य के श्रेष्ठ कवि गोस्वामी तुलसीदास का जन्म विक्रम संवत् 1589 में उत्तर प्रदेश के बाँदा जिले में स्थित गाँव राजापुर में हुआ था, ऐसा माना जाता है। तुलसी के पिता का नाम आत्माराम दुबे और माता का नाम हुलसी था। कहते हैं कि अशुभ एवं अभुक्त नक्षत्र में पैदा हुए तुलसी को उनके माता-पिता ने अनिष्ट की आशंका से त्याग दिया था। बाद में स्वामी नरहरिदास ने तुलसी को दीक्षा और रामभक्ति के संस्कार दिए। तुलसी का विवाह विदुषी महिला रत्नावली से हुआ, जिसकी मधुर झिड़की से तुलसी वैराग्य को प्राप्त हुए और रामभक्ति में तीर्थ स्थानों का भ्रमण करते हुए संवत् 1680 में काशी के गंगाघाट पर श्रावण शुक्ल सप्तमी को तुलसी का निधन हुआ।

विद्वानों ने गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित छोटे-बड़े बारह ग्रंथों को प्रामाणिक माना है – 'दोहावली', 'कवितावली', 'गीतावली', 'रामचरितमानस', 'रामाज्ञा प्रश्नावली', और 'विनयपत्रिका' ये बड़े ग्रंथ हैं तथा 'रामललानहछू', 'पार्वतीमंगल', 'जानकीमंगल', 'बरवै रामायण', 'वैराग्य संदीपनी' और 'श्रीकृष्णगीतावली' छोटे ग्रंथ हैं। इन सभी रचनाओं में भाव-वैविध्य गोस्वामी जी की सबसे बड़ी विशेषता है। समन्वयवाद तुलसी की भक्ति भावना का सबसे बड़ा गुण है। उनका सारा काव्य समन्वय की विराट् चेष्टा है। उसमें केवल लोक और शास्त्र का ही समन्वय नहीं है - गार्हस्थ्य और वैराग्य का, भक्ति और ज्ञान का, भाषा और संस्कृति का, निर्गुण और सगुण का, पुराण और काव्य का, भावावेग और अनासक्त चिंतन का समन्वय 'रामचरितमानस' के आदि से अंत तक दो छोरों पर जाने वाली पराकोटियों को मिलाने का प्रयत्न है।

पाठ परिचय –

'श्रीरामचरितमानस' को भारतीय जीवन-मूल्यों का समाज-शास्त्र कहा जाता है, जिसमें पारिवारिक प्रेम और मर्यादा के साथ-साथ राष्ट्र-समाज के प्रति मानवीय दायित्वों का वर्णन है।

प्रस्तुत कविता 'श्रीरामचरितमानस' का अंश है, जिसमें मंदोदरी द्वारा समय–समय पर अपने पति रावण को दी गई सीख का वर्णन है। मंदोदरी ने रावण को कई बार समझाया कि राम साक्षात् परमब्रह्म है तथा मर्यादा की पुनःप्रतिष्ठा के लिए धरती पर अवतरित हुए हैं। सीता अपहरण द्वारा श्रीराम का अकारण विरोध करने से निशिचर वंश का नाश होगा, अतः सीता को पुनः श्रीराम को लौटा देना चाहिए। मयतनया मंदोदरी राजमहिषी होकर भी नीति विषारद, बहुश्रुता, दूरदर्शी, विवेकशील, वेद–विद्या विदुषी और क्रांतिकारी पतिव्रता है जो अपने पति के कदाचरण, हिंसा और युद्धोन्माद का समय-समय पर विरोध करती है।

रूपवती साम्राज्ञी और अप्रतिम सौंदर्य की प्रतीक मंदोदरी भक्ति की प्रखर चेतना है; जो मोहमाया के मध्य भी परम सत्ता के वैशिष्ट्य का निरंतर निरूपण करती रहती है। तुलसी की दृष्टि में स्त्रियाँ समाज में निरीह, अबला और पददलित नहीं हैं, अपितु वह रावण और बालि जैसे भटके हुए पुरुषों के लिए प्रकाश स्तंभ

हैं।

मंदोदरी जैसी पतिव्रता, सत्यनिष्ठ और सुशील नारियाँ हर देश, काल, परिस्थिति और समाज में विद्यमान रही हैं, किंतु पुरुष अपने अहंकार और पौरुषत्व के दंभ में एक स्त्री और अपनी पत्नी के प्रबोधन को ही तिरस्कृत कर देता है और अंत में रावण जैसा विराट पुरुष भी विनाश को प्राप्त होता है।

मंदोदरी की रावण को सीख

सुंदरकाण्ड

कंत करश हरि सन परिहरहू। मोर कहा अति हित हियँ धरहू।।
समुझत जासु दूत कइ करनी। स्रवहिं गर्भ रजनीचर घरनी।।
तासु नारि निज सचिव बोलाई। पठवहु कंत जो चहहु भलाई।।
तव कुल कमल बिपिन दुखदाई। सीता सीत निसा सम आई।।
सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हें। हित न तुम्हार संभु अज कीन्हें।।

दोहा– राम बान अहि गन सरिस निकर निसाचर भेक।
जब लगि ग्रसत न तब लगि जतनु करहु तजि टेक।।

लंका काण्ड

मंदोदरीं सुन्यो प्रभु आयो। कौतुकहीं पाथोधि बँधायो।।
कर गहि पतिहि भवन निज आनी। बोली परम मनोहर बानी।।
चरन नाइ सिरु अंचलु रोपा। सुनहु बचन पिय परिहरि कोपा।।
नाथ बयरु कीजे ताही सों। बुधि बल सकिअ जीति जाही सों।।
तुम्हहिं रघुपति अंतर कैसा। खलु खद्योत दिनकरहि जैसा।।
अतिबल मधु कैटभ जेहिं मारे। महाबीर दितिसुत संघारे।।
जेहिं बलि बाँधि सहसभुज मारा। सोइ अवतरेउ हरन महि भारा।।
तासु बिरोध न कीजिअ नाथा। काल करम जिव जाकें हाथा।।

दोहा – रामहि सौंपि जानकी नाइ कमल पद माथ।
सुत कहुँ राज समर्पि बन, जाइ भजिअ रघुनाथ।।

नाथ दीनदयाल रघुराई। बाघउ सनमुख गएँ न खाई।।
चाहिअ करन सो सब करि बीते। तुम्ह सुर असुर चराचर जीते।।
संत कहहि असि नीति दसानन। चौथेंपन जाइहि नृप कानन।।
तासु भजन कीजिअ तहँ भर्ता। जो कर्ता पालक संहर्ता।।
सोइ रघुबीर प्रनत अनुरागी। भजहु नाथ ममता सब त्यागी।।
मुनिबर जतनु करहिं जेहि लागी। भूप राजु तजि होहिं बिरागी।।

सोइ कोसलाधीस रघुराया। आयउ करन तोहि पर दाया।।
जौं पिय मानहु मोर सिखावन। सुजसु होइ तिहुँ पुर अति पावन।।
दोहा – अस कहि नयन नीर भरि गहि पद कंपित गात।
नाथ भजहु रघुनाथहि अचल होइ अहिवात।।

•••

सजल नयन कह जुग कर जोरी। सुनहु प्रानपति बिनती मोरी।।
कंतन राम बिरोध परिहरहू। जानि मनुज जनि हठ मन धरहू।।
दोहा – बिस्वरूप रघुबंस मनि करहु बचन बिस्वासु।
लोक कल्पना बेद कर अंग अंग प्रति जासु।।
पद पाताल सीस अज धामा। अपर लोक अँग अँग बिश्रामा।।
भृकुटि बिलास भयंकर काला। नयन दिवाकर कच घन माला।।
जासु घ्रान अस्विनीकुमारा। निसि अरु दिवस निमेश अपारा।।
श्रवन दिसा दस बेद बखानी। मारुत स्वास निगम निज बानी।।
अधर लोभ जम दसन कराला। माया हास बाहु दिगपाला।।
आनन अनल अंबुपति जीहा। उतपति पालन प्रलय समीहा।।
रोम राजि अष्टादस भारा। अस्थि सैल सरिता नस जारा।।
उदर उदधि अधगो जातना। जगमय प्रभु का बहु कलपना।।
दोहा – अहंकार सिव बुद्धि अज मन ससि चित्त महान।
मनुज बास सचराचर रूप राम भगवान।।
अस बिचारि सुनु प्रानपति प्रभु सन बयरु बिहाइ।
प्रीति करहु रघुबीर पद मम अहिवात न जाइ।।

•••

साँझ जानि दसकंधर भवन गयउ बिलखाइ।
मंदोदरीं रावनहि बहुरि कहा समुझाइ।।
कंत समुझि मन तजहु कुमति ही। सोह न समर तुम्हहिं रघुपति ही।।
रामानुज लघु रेख खचाई। सोउ नहिं नाघेहु असि मनुसाई।।
प्रिय तुम्ह ताहि जितब संग्रामा। जाके दूत केर यह कामा।।
कौतुक सिंधु नाघि तव लंका। आयउ कपि केहरी असंका।।
रखवारे हति बिपिन उजारा। देखत तोहि अच्छ तेहिं मारा।।
जारि सकल पुर कीन्हेसि छारा। कहाँ रहा बल गर्ब तुम्हारा।।
अब पति मृशा गाल जनि मारहु। मोर कहा कछु हृदयँ बिचारहु।।

पति रघुपतिहि नृपति जनि मानहु। अग जग नाथ अतुल बल जानहु।।
बान प्रताप जान मारीचा। तासु कहा नहिं मानेहि नीचा।।
जनक सभाँ अगनित भूपाला। रहे तुम्हउ बल अतुल बिसाला।।
भंजि धनुश जानकी बिआही। तब संग्राम जितेहु किन ताही।।
सुरपति सुत जानइ बल थोरा। राखा जिअत आँखि गहि फोरा।।
सूपनखा कै गति तुम्ह देखी। तदपि हृदयँ नहिं लाज बिसेषी।।

दोहा – बधि बिराध खर दूषनहिं लीलाँ हत्यो कबंध।
बालि एक सर मारयो तेहि जानहु दसकंध।।

जेहिं जलनाथ बँधायउ हेला। उतरे प्रभु दल सहित सुबेला।
कारुनीक दिनकर कुल केतू। दूत पठायउ तव हित हेतू।।
सभा माझ जेहिं तव बल मथा। करि बरूथ महुँ मृगपति जथा।।
अंगद हनुमत अनुचर जाके। रन बाँकुरे बीर अति बाँके।।
तेहि कहँ पिय पुनि पुनि नर कहहू। मुधा मान ममता मद बहहू।।
अहह कंत कृत राम बिरोधा। काल बिबस मन उपज न बोधा।।
काल दंड गहि काहु न मारा। हरइ धर्म बल बुद्धि बिचारा।।
निकट काल जेहि आवत साईं। तेहि भ्रम होइ तुम्हारिहि नाईं।।

दोहा – दुइ सुत मरे दहेउ पुर अजहुँ पूर पिय देहु।
कृपासिंधु रघुनाथ भजि नाथ बिमल जसु लेहु।।

•••

तव बल नाथ डोल नित धरनी। तेज हीन पावक ससि तरनी।।
सेश कमठ सहि सकहिं न भारा। सो तनु भूमि परेउ भरि छारा।।
बरुन कुबेर सुरेस समीरा। रन सन्मुख धरि काहुँ न धीरा।।
भुजबल जितेहु काल जम साईं। आजु परेहु अनाथ की नाईं।।
जगत बिदित तुम्हारि प्रभुताई। सुत परिजन बल बरनि न जाई।।
राम बिमुख उस हाल तुम्हारा। रहा न कोउ कुल रोवनिहारा।।
तव बस बिधि प्रपंच सब नाथा। सभय दिसिप नित नावहिं माथा।।
अब तव सिर भुज जंबुक खाहीं। राम बिमुख यह अनुचित नाहीं।।
काल बिबस पति कहा न माना। अब जग नाथु मनुज करि जाना।।

दोहा – जान्यो मनुज करि दनुज कानन दहन पावक हरि स्वयं।
जेहि नमत सिव ब्रह्मादि सुर पिय भजेहु नहिं करुनामयं।।
आजन्म ते परद्रोह रत पापौघमय तव तनु अयं।

तुम्हहू दियो निज धाम राम नमामि ब्रह्म निरामयं।।

दोहा – अहह नाथ रघुनाथ सम कृपासिंधु नहिं आन।
जोगि बृंद दुर्लभ गति तोहि दीन्हि भगवान।।

शब्दार्थ –

कर – हाथ / जोरि – जोड़कर / कंत – प्रियतम, स्वामी / परिहरहू – छोड़ना / धरहू – धारण करना / स्रवहिं – गिर जाना / बिपिन – वन / अज – ब्रह्मा / पाथोधि – समुद्र / बयरु – बैर–दुश्मनी / खद्योत – जुगनूं / कानन – वन / अहिवात – सुहाग / जोधा – योद्धा / कच – केश, बाल / घ्रान – नासिका / निमेश – पलक / रामानुज – लक्ष्मण / जनि – मत / रोवनिहारा – रोने वाला।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. 'श्रीरामचरितमानस' के रचयिता कौन हैं ?
   (क) कबीरदास (ख) तुलसीदास
   (ग) रैदास (घ) सूरदास ( )
2. मन्दोदरी किसकी पत्नी थी ?
   (क) रावण (ख) कुम्भकर्ण
   (ग) मेघनाद (घ) राम ( )

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. रावण को लंकेश क्यों कहते हैं ?
2. मंदोदरी ने रावण को किससे बैर न लेने की सलाह दी ?
3. रावण किसका अपहरण करके लाया था ?
4. कवि ने श्रीराम और रावण में किस प्रकार का अंतर बताया है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. रावण ने सीताहरण क्यों किया ?
2. मंदोदरी राम को क्या समझती थी ?
3. मंदोदरी ने रावण से क्या कहा ?
4. निम्नलिखित पंक्ति का भावार्थ लिखिए –
   ''निकट काल जेहि आवत साईं। तेहि भ्रम होइ तुम्हारिहि नाईं।।''

निबंधात्मक प्रश्न –

1. मंदोदरी द्वारा रावण को दी गई शिक्षा का विस्तार से वर्णन कीजिए।
2. रावण और मंदोदरी के चरित्र का तुलनात्मक विवेचन कीजिए।
3. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –
   (क) ''कंत समुझि मन तजहु .....कहाँ रहा बल गर्ब तुम्हारा।।''
   (ख) तुम्हहि रघुपति अंतर कैसा।.....काल करम जिव जाकें हाथा।।

•••